प्रा.डॉ.श्रीमती शशिप्रभा जैन
एम.ए.(हिन्दी), एम.ए.(समाजशास्त्र)
पी.एच्.डी.
महावीर महाविद्यालय,
कोल्हापुर ।

प्रमाणपत्र

मैं यह प्रमाणित करती हूँ कि सौ.वैजयंती उत्तम व्होरा ने मेरे निर्देशन में यह शोध प्रबन्ध एम.फिल्. उपाधि के लिए लिखा है। पूर्व योजनानुसार यह कार्य सम्पन्न हुआ है। जो तथ्य इस प्रबन्ध में प्रस्तुत किये गये है, मेरी जानकारी के अनुसार सही है।

स्थल - कोल्हापुर ।
दिनांक -23/5/90

निर्देशिका
हिन्दी प्राध्यापिका
महावीर महाविद्यालय,कोल्हापुर ।

प्र मा ण प त्र

मैं यह प्रमाणित करती हूँ कि प्रा.डॉ.शशिप्रभा जैन जी के निर्देशन में मैंने यह शोध - प्रबन्ध एम्.फिल्. उपाधि के लिए लिखा है। इस प्रबन्ध में प्रस्तुत की गई सभी बातें मेरी जानकारी के अनुसार सही है।

शोध छात्रा

सौ.वैजयन्ती उ. व्होरा

स्थल - कोल्हापुर।

दिनांक -२७-५-१९९०।

••

अनुक्रमणिका

			पृष्ठ संख्या
		भूमिका	१-४
प्रथम अध्याय	-	संस्कारों का सामान्य परिचय ।	५-३९
		संस्कारों का अर्थ ।	
		संस्कारों की संख्या ।	
		संस्कारों का प्रयोजन ।	
द्वितीय अध्याय	-	प्रेमचंदजी की कहानियों में प्रतिबिंबित विवाह संस्कारों का मूल्यांकन ।	४०-१३८
तृतीय अध्याय	-	दाम्पत्येतर संबंध ।	१३९-१९०
		पति पत्नी का संबंध ।	
		बहू और सास का संबंध ।	
		बहू और ससुर का संबंध ।	
		भाभी और ननद का संबंध ।	
		भाभी और देवर का संबंध ।	
		देवरानी और जेठानी का संबंध ।	
		माँ और पुत्र का संबंध ।	
चतुर्थ अध्याय	-	प्रेमचंदजी की कहानियों में प्रतिबिंबित अन्त्येष्टि संस्कारों का मूल्यांकन ।	१९१-२५६
पंचम अध्याय	-	उपसंहार	२५७-२६२
		संदर्भ सूची	२६३-२६५
		आधार ग्रंथ	
		संदर्भ ग्रंथ	

भू मि का

भूमिका

महावीर महाविधालय, कोल्हापुर , एम्.फिल्.हिन्दी विभाग की छात्रा होने के नाते प्रस्तुत शोध प्रबन्ध को प्रस्तुत करते हुए मुझे हार्दिक खुशी हो रही है। इसका समूचा श्रेय मैं प्रथम महावीर महाविधालय के प्रधानाचार्य डॉ.बी.बी. पाटील, डॉ.सौ.शशिप्रभा जैन जी को देती हूं। एम्.फिल्. हिन्दी में प्रवेश लेने के पश्चात् मेरे सामने अनेकों शोध प्रबन्ध के विषय थे। परंतु हिंदी के मूर्धन्य साहित्यकार प्रेमचंद जी की कहानियाँ ` मृतक भोज,`` अलग्योझा`,` कुसुम ` ` दो सखियाँ`, इन कहानियों को पढने के पश्चात् इनके अंतर्गत आनेवाले अन्त्येष्टि संस्कार और विवाह संस्कार, रीति रिवाजों ने मुझे इतना आकर्षित किया कि मेरे मन में प्रेमचंद जी की मानसरोवर के आठो भागों में प्रकाशित कहानियों को पढने की भी लालसा पैदा हुई तथा इन कहानियों के अंतर्गत प्रतिबिंबित हुए विवाह संस्कार और अन्त्येष्टि संस्कारों से भलिभाति परिचित होने के लिए और उनका विश्लेषण करने के लिए शिवाजी विश्वविधालय की एम्.फिल्. उपाधि के लिए एक लघु शोध प्रबन्ध प्रस्तुत करने का विचार किया।

प्रेमचंद हिन्दी साहित्य के एक सफल और अद्वितीय साहित्यकार है। साहित्य की हर विधा में आपने अपने व्यक्तित्व की अमिट छाप छोडी है। आधुनिक काल में साहित्य की विविध विधाओं का विकास हुआ। इसी तरह कहानी का प्रवाह भी अबाध गति से बहता रहा। प्रेमचंद जी ने अपनी कहानियों के बिंदुओं को अपने आसपास के जीवन की घटनाओं और वातावरण से समेटा है। प्रेमचंद जी की कहानियों में समाज पडोस,परिवार में घटित होने वाली घटनाओं का ही वर्णन है। इसी प्रकार मानव जीवन में होने वाली प्रमुख घटना विवाह और मृत्यु को प्रेमचंद जी कैसे अनदेखा कर सकते थे ? इस लिए जहाँ ढूँढने पर मुझे विवाह और अन्त्येष्टि संस्कार दिखाई दिए उन्हे समेट कर मैंने अपने इस लघु शोध प्रबंध को आकार दिया। प्रेमचंद जी ने संस्कारों को अपनी कहानियों में अतीव मौलिक योगदान दिया है।

प्रेमचंद जी मानव जीवन के सूक्ष्म पारखी थे। मनुष्य के मानविश्वसे भी आप अच्छीतरह से परिचित थे। अत: आपने संस्कार को मनुष्य जीवन का सबसे प्रमुख तत्व स्वीकार किया। आपने अपनी कहानियों में संस्कार के उन रुपों को रुपायित किया है जो समय समय पर मनुष्य के जीवन में अवतरित होते है। संस्कार के इन भिन्न भिन्न रुपों को मद्दे नजर रखते हुए प्रेमचंद जी की कहानियों में चित्रित संस्कार के स्वरुप को स्पष्ट करने का मैंने इस शोध प्रबन्ध में प्रयत्न किया है।

मुझे हर्ष है कि आज प्रेमचंद जी की मानसरोवर के आठ भागो में प्रकाशित सर्व कहानियों को और उनके अंतर्गत प्रतिबिंबित हुए विवाह संस्कार और अन्त्येष्टि संस्कार को मैं सूक्ष्मता से जान रही हूँ। उस जानकारी को मैं इस लघु शोध प्रबन्ध में शिवाजी विश्वविद्यालय की एम्.फिल्. उपाधि के लिए प्रस्तुत कर रही हूँ।

मेरे लिए सौभाग्य की बात रही है कि इस शोध-प्रबन्ध का काम आदरणीय प्रा.डॉ.श्रीमती शशिप्रभा जैन,हिन्दी विभाग महावीर महाविद्यालय, कोल्हापुर के मार्गदर्शन में कर सकी। उनके पथप्रदर्शन से ही यह शोध कार्य पूर्ण हो सका। मै स्वयं को बडी भाग्यवान समझाती हूँ कि मुझे आदरणीय जैन जी मैडम जैसी मार्गदर्शिका मिली। उन्होंने समय समय पर मार्गदर्शन किया। मुझे प्रोत्साहित किया। मै वक्त बेवक्त उनके घर जाती थी मै अपनी समस्या उनके सामने रखती थी आप मेरा स्वागत प्रसन्न एवं हास्य मुद्रा से करती। उन्होंने मेरी समस्याओं को बडे सहज रीति से सुलझाकर मेरा शोध कार्य पूर्ण करने के लिए मेरा पथ प्रदर्शन किया। अत: मै जीवन भर उनकी कृतज्ञ रहूँगी। अनेक कृतिकारों का अध्ययन भी मुझे लाभ प्रद हुआ अत: उन सभी साहित्यिक प्रतिभाओं के प्रति आभार व्यक्त करना मेरा दायित्व समझाती हूँ।

प्रस्तुत शोध प्रबन्ध का विस्तार से अध्ययन करते समय सुविधा की दृष्टि से इसे पाँच अध्यायों में विभाजित किया है।

प्रथम अध्याय में संस्कार के स्वरुप के बारे में सूक्ष्मता के साथ विचार किया गया है। संस्कारों की महत्ता तथा उसके विविध रूपों के बारे में स्पष्टीकरण दिया

गया है। संस्कार और मानव जीवन का जो अटूट संबंध है इस बारे में भी इस अध्याय में चर्चा की गयी है। आज जीवन में नव मानव और नव समाज निर्मित करने हेतु संस्कारों की कितनी आवश्यक्ता है इसको बताने का प्रयास किया है।

द्वितीय अध्याय में प्रेमचंदजी की कहानियों में प्रतिबिंबित विवाह संस्कार को प्रस्तुत किया गया है। विवाह संस्कार में जो तरह तरह की रीति रिवाज आ गए है उनको भी स्पष्ट करने का प्रयास किया है साथ ही साथ विवाह संस्कार में जो दोष पैदा हो गए है उनकी भी विस्तार से चर्चा की है। इसके पीछे मेरा यही मकसद रहा है कि विवाह संस्कार के अंतर्गत आनेवाले विधि विधान, रस्मोरिवाजों से आधुनिक युग के नवयुवकों को परिचित किया जाए और साथ ही साथ प्रेमचंदजी का विवाह संस्कारों के बारे में भी कितना सूक्ष्म अध्ययन है उनकी यह खासियत उनके प्रिय वाचकों के सामने साकार हो उठे।

तृतीय अध्याय में दाम्पत्येत्तर संबंध को दिखाया है। मानव जीवन में विवाह संस्कार अत्यंत महत्वपूर्ण संस्कार है। विवाह के पश्चात नारी पुरुष पति पत्नी के रिश्ते के साथ अन्य अनेक रिश्तो में भी बँध जाते है। मैंने प्रेमचंद जी की कहानियों में प्रतिबिंबित दाम्पत्येतर संबंधों के विभिन्न रुपों को चित्रित करने का प्रयास किया है। इन संबंधों की सफलता और असफलता के कारणों को भी बताया है।

चतुर्थ अध्याय अन्त्येष्टि संस्कारों के बारे में है। मानव जीवन का अंतिम संस्कार अन्त्येष्टि संस्कार के नाम से जाना जाता है। मृत्यु तो जीवन की सच्चाई है, तो इसे कहानीकार कैसे नजर अंदाज कर सकते है। प्रेमचंद जी की काफी कहानियों में मृत्यु और अन्त्येष्टि संस्कार से संबंधित विभिन्न रीतिरिवाजों के संदर्भ आये है। मैंने अपने इस लघु शोध प्रबन्ध के चतुर्थ अध्याय में अन्त्येष्टि संस्कार और उसमें आनेवाली विभिन्न रस्मोरिवाज का उल्लेख किया है।

पंचम अध्याय उपसंहार का है जिसमें मैंने अपने लघु शोध प्रबन्ध को सार रूप में प्रस्तुत किया है ।

शोधकार्य पूरा करने के लिए मैंने शिवाजी विश्वविद्यालय,कोल्हापुर , महावीर कॉलेज के पुस्तकालयों से ग्रंथ प्राप्त किये । अत: शिवाजी विश्वविद्यालय के ग्रंथालय के वरिष्ठ सहाय्यक श्री एस.एस.कामत और वरिष्ठ लेखनिक श्री.शंकरराव पाटील, कोंगेकर, श्री.दि.बा.डांगे, ने ग्रंथ प्राप्त कराने में मुझे काफी सहायता की है ,सुबक टंकलेखन करनेका श्रेय श्री.बालकृष्ण सावंत,कोल्हापुर,मै सबकी आभारी हूँ ।

मै अपने इनके बारे में क्या कहूँ ? जो मधुर मुस्कराहट से मेरी हिम्मत को बंधाते रहे । उनके लिए कुछ कहना मात्र औपचारिक्ता है । परिवार के सभी आदरणीय जनों का आशीर्वाद मेरे साथ था और भविष्य में भी मैं इसकी आशा करती रहूँगी ।

इस लघु शोध प्रबंध के अंत में सहायक ग्रंथों की सूची जोड दी है जो मुझे इस शोध कार्य के सिलसिले में विशेष मददगार रही है ।

इसी के साथ ही मैं अपना यह लघु शोध प्रबन्ध अत्यंत विनम्रता के साथ आप के अवलोकन लिए प्रस्तुत कर रही हूँ

(signature)

कोल्हापुर - (सौ.वैजयन्ती उत्तम व्होरा)

दिनांक -२३-५-१९९० ।

••